Digtized by Muthulakshmi Research Academy

623

भगवान हमारा मित्र

चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

...0. In Pub... ...mai... Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

भगवान हमारा मित्र

संत लॉरेंस का 'सौहृद योग'

चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य की
तमिल पुस्तक का
श्रीमती लक्ष्मी देवदास गांधी द्वारा
हिन्दी रूपान्तर

□

१९७६
सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

सस्ता साहित्य मण्डल

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

प्रकाशक
यशपाल जैन
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

•

दूसरी बार : १९७६
मूल्य : एक रुपया

•

मुद्रक
उद्योगशाला प्रेस,
किंग्सवे, दिल्ली-९

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

प्रकाशकीय

'मण्डल से बहुत-सा आध्यात्मिक साहित्य प्रकाशित हुआ है, अब भी होता रहता है। हमें हर्ष है कि पाठकों को वह साहित्य बहुत ही रुचिकर हुआ है। तभी तो उस साहित्य में से अनेक पुस्तकों के कई-कई संस्करण हुए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक उसी शृंखला की एक मूल्यवान कड़ी है। इसमें एक ईसाई संत की अनुभूतियों का संग्रह है। संत किसी भी देश के हों, उनकी भाषा कुछ भी हो, पर उनकी भावनाएं समान होती हैं। यही कारण है कि इस पुस्तक को पढ़कर ऐसा मालूम होता है, मानो हम भारतीय अध्यात्म के किसी ग्रंथ का पारायण कर रहे हैं।

पुस्तक छोटी-सी है, पर इसकी अनुभूतियां बड़ी गहरी हैं। हमारा पक्का विश्वास है कि जो भी पाठक इसे मनोयोगपूर्वक पढ़ेंगे, वे इससे अवश्य लाभान्वित होंगे।

यह पुस्तक भारत के प्रकांड विद्वान और दर्शन-शास्त्री श्री राजगोपालाचार्य द्वारा मूल रूप में तमिल में लिखी गई है। राजाजी की लेखनी और विद्वत्ता से भारतीय पाठक भली-भांति परिचित हैं। उनकी 'दशरथ-नंदन श्रीराम', 'महाभारत कथा' तथा अन्य पुस्तकें पढ़कर जाने कितने पाठकों को लाभ पहुंचा है। हम आशा करते हैं कि उनकी यह पुस्तक पाठकों को स्थाई सुख और शांति का मार्ग दिखावेगी।

पुस्तक का हिन्दी-रूपान्तर राजाजी की सुपुत्री ने मूल तमिल से किया है। इसलिए पुस्तक की प्रामाणिकता असंदिग्ध है।

—मंत्री

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

प्रस्तावना

संत-महात्माओं का कुछ परिचय मुझे हुआ है—उनके बारे में पढ़कर, सुनकर और कुछका दर्शन करके भी। उनमें संत लारेंस ने मेरे चित्त को बहुत ही आकर्षित किया।

हमारे शास्त्रों की मान्यता है कि जितनी भक्ति-प्रणालियां हैं, सभी उस एक प्रभु के प्रति ही हैं, जिसे हम 'केशव' कहते हैं।

"आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्।
सर्व-देव नमस्कार: केशवं-प्रति गच्छति ॥"

भारत के ऋषि-मुनियों की सूक्तियों में इस उपदेश को मैं सर्वोच्च समझता हूं। यह सर्व-धर्म-समानत्व का तत्व, एक उज्ज्वल रत्न के समान है, जिसकी सराहना सारी दुनिया में की जाती है।

अत: मुझे आशा है कि हमारे वेदान्ती मित्र-गण मुझसे इस बात पर अप्रसन्न न हो जायंगे कि मैंने एक ईसाई साधु के भक्ति-मार्ग के बारे में लिखा।

आजकल के लोगों की मनोवृत्तियों को देखते हुए मेरे मन में यह इच्छा हुई कि महात्मा संत लॉरेंस के बारे में कुछ साल पहले मैंने जो लिखा था, वही फिर से कहूं।

संत लॉरेंस के तत्वों को हम एक 'योगमार्ग' मानकर इसे 'सौहृदयोग' कह सकते हैं।

इस 'सौहृदयोग' का बीज श्रीमद्भगवद्गीता में भी है। यह हमें ग्यारहवें अध्याय में मिलता है। अर्जुन कृष्ण-भगवान से क्षमा प्रार्थना करते हुए कहता है :

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

'पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः,
प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम् ।"

भक्त अव्यक्त भगवान का श्रद्धा-भक्ति के बल से अपने हृदय के अन्दर दर्शन करता है; केवल दर्शन ही नहीं, बल्कि उस प्रभु को अपना निरन्तर का साथी बना लेता है, जैसाकि अर्जुन ने किया । संत लॉरेंस का भी यही उपदेश था । हमारे धर्म-ग्रंथों में यही भाव नायक-नायिका के रूप में हम देखते हैं । हृदय में भगवान की स्थापना करके, निरन्तर उसे अपना परममित्र मानकर संत लॉरेंस ने मुक्ति पाई ।

महात्मा गांधी ने भी हमें सर्व-धर्म-समानत्व का मार्ग दिखाया और उसी सिद्धान्त के लिए अपने प्राणों का बलिदान किया । उन्होंने हमें जो सीख दी है, उसे हम भूल न जायं, व्यर्थ न हो जाने दें ।

सभी देशों में समय-समय पर ज्ञानी लोग पैदा हुए हैं, जिन्होंने आध्यात्मिकता-रूपी ज्योतिको सतत प्रज्ज्वलित रखने की कोशिश की है।

संत लॉरेंस, आज से करीब तीनसौ वर्ष पहले पैदा हुए थे। वह एक सीधे-सादे सज्जन थे । यदि इस ज्ञानी पुरुष के उपदेशों को हमारे देश में रूढ़ि-बद्ध लोग पढ़ें और उनका अध्ययन करें तो उससे बहुत लाभ होगा ।

भगवान के अस्तित्व को मानकर हम पूजा-पाठ करते हैं, किन्तु केवल यही पर्याप्त नहीं होता । आजकल चारों ओर जो अत्याचार और अनाचार हम देखते हैं वे ही इसका प्रमाण हैं । वे ही इस बात की पुष्टि कर सकते हैं कि हमारी निगाह पूरी तौर से भगवान की ओर नहीं है। भगवान की आराधना के लिए हमारे पुरखों ने कई उपाय बताये हैं । इन्हें 'योग' कहते हैं । जैसे, 'ज्ञानयोग', 'ध्यानयोग', 'कर्मयोग', 'राजयोग', 'भक्तियोग', आदि-आदि ।

इस ईसाई संत ने भगवान से मैत्री करने के लिए एक 'सौहृदयोग' का प्रयोग किया और उसमें वह सफल हुए । इस योग का उपदेश उन्होंने औरों को भी दिया । उनका कहना था कि "भगवान हर क्षण,

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

छोटे-बड़े कामों में जब हम लगे होते हैं तब भी, और विश्राम करते हैं तब भी, हमारे पास मां-बाप, भाई-बन्धु के समान उपस्थित रहता है। इस सत्य को हम पहचानें और इसके अनुसार भगवान को अपने साथ रखकर जीवन बिताएं।"

संत लॉरेंस का सदा यही कहना था कि हर मनुष्य भगवान को अपना निकटतम मित्र मानकर उसे अपने पास टिकाने की शक्ति, प्रयत्न करने से, पा सकता है।

"जब तुमसे गलती हो जाय तो भगवान को खुले दिल से पुकारो। तुम्हारी पुकार सुनते ही वह एक मां की तरह तुम्हारे पास दौड़कर आजायगा। तुम्हारे प्रयत्नों में वह एक बड़े भाई की तरह तुम्हें सहारा देगा, छोटे भाई की तरह भरसक मदद करेगा और एक बाप की तरह शुभेच्छा के साथ तुम्हारा मार्ग-दर्शन करेगा।" इस बात को संत लॉरेंस स्वयं मानते थे और औरों को इसीका उपदेश देते थे।

वह कहते थे कि "दूध पीता बच्चा जिस प्रकार अपनी मां से चिपट कर रहता है, बेल जिस प्रकार पेड़ के सहारे से लिपटी रहती है, तुम भी भगवान के साथ उसीके आसरे रहो और अपने रोजमर्रा के सभी काम उसको साथ लेकर करो।"

ज्ञानी लोग ही बता सकते हैं कि संत लॉरेंस का यह मार्ग ज्ञानमार्ग था अथवा कर्मयोग या भक्तिमार्ग। यह भी मान सकते हैं कि ज्ञान से उत्पन्न होकर तथा भक्ति के खिंचाव से बढ़कर, कर्म और ज्ञान का यह वही समन्वय है, जिसे भगवान कृष्ण ने गीता में स्पष्ट किया है। भगवान कहते हैं :

'यत् करोषि, यदश्नासि
यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत् तपस्यसि कौंतेय,
तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥

संत लॉरेंस के इन उपदेशों और सूक्तियों को मैं तमिल में लिख

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

रहा हूं। इन्हें पढ़ते समय उपनिषदों के वाक्य, भगवद्गीता के श्लोक, हमारे आचार्य-पुरुषों के वचन याद आ जाते हैं। उनके बारे में भी बहुत कुछ लिखा जा सकता है, किन्तु उससे लाभ क्या? दुनिया के सभी महापुरुषों ने एक ही सत्य को देखा और अपनी-अपनी भाषा में उसका उपदेश किया है। हमें यह सोचकर सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिए कि इसने क्या नई चीज बताई, हमारे शास्त्रों में भी तो ये बातें लिखी गई हैं।

हमारे धर्म-ग्रंथों में जो बातें लिखी गई हैं, उसके अनुसार हम चल रहे हों तो बात और होती। सिर्फ यह सोचकर गर्व अनुभव करना कि "हमारे धर्म-ग्रंथों में तो सभी कुछ है," निरर्थक बात है।

संसार के सभी धर्म मनुष्य को ऊपर उठाकर परमेश्वर की ओर ले जाने के लिए हैं। हरेक धर्म के महापुरुषों ने उस पराशक्ति के अस्तित्व को पहचानकर, अनुभव करके भक्ति के गीत गाये हैं।

हम भी विनम्र भाव से, भक्ति और श्रद्धा के साथ, अपने हृदय के अन्दर उस प्रभु को प्रविष्ट करके अपनी सद्भावनाओं के बल पर उसे टिकाये रखें।

चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

विषय-सूची

१. संत लॉरेंस कौन थे	११
२. उनके उपदेश	१३
३. भगवान का आश्रय	१५
४. सब काम भगवान की सेवा के लिए	१८
५. मोक्ष का एकमात्र मार्ग	२०
६. सच्चा संन्यास	२२
७. तीन गुण	२४
८. हृदय : भगवान का घर	२६
९. भगवत्-प्रेम में सम्पूर्ण आनंद	२८
१०. प्रार्थना के लिए ऊंची आवाज नहीं	२९
११. मन की चंचलता को रोकें	३०
१२. 'उस पर पूरा भरोसा रखो'	३२
१३. भगवान कहीं दूर नहीं है	३६

□

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

भगवान
हमारा मित्र

•

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

: १ :

सन्त लॉरेंस कौन थे ?

संत लॉरेंस के समय में इसाई धर्मावलंबियों में विभिन्नता नहीं थी। सभी कैथोलिक थे। दीक्षाप्राप्त संन्यासियों का एक कार्मेल मठ था। लॉरेंस उस मठ में संन्यासियों की सेवा-चाकरी किया करते थे। धीरे-धीरे उनकी सेवा, भक्ति, ज्ञान और गुणों की प्रशंसा सब जगह होने लगी। लॉरेंस से बात-चीत करने और उनसे उपदेश प्राप्त करने बड़े-बड़े लोग आने लगे। ऐसे लोगों की डायरियों तथा लारेंस के स्वयं के कुछ कागज-पत्रों से ही हमें इस संत के बारे में जानकारी हुई है।

संत लारेंस की जन्म-तिथि का ठीक पता नहीं चलता। अनुमान किया जाता है कि वह सन् १६११ में पैदा हुए थे।

फ्रांस देश में लारेन प्रदेश के एक साधारण, किन्तु धार्मिक वृत्तिवाले कुटुंब में इनका जन्म हुआ। इनका असली नाम था निकोलस हर्मन। मठ में आने के पश्चात वहां इनका नाम लॉरेंस रखा गया। जब यह अठारह साल के थे तब एक बार फ़ौज में लड़ते हुए घायल हो गये। वहां से निकलकर एक सरकारी खजांची के यहां नौकरी कर ली। इस काल के अपने अनुभव के बारे में उन्होंने कहा है :

"जाड़े के दिन थे, खूब सर्दी पड़ रही थी। पेड़-पत्ते बर्फ

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

के कारण मुरझाकर सूख गये थे। मुझे ख्याल आया कि वसन्त के आने पर ये ही पेड़-पत्ते, जो निर्जीव लग रहे हैं, फिर से निखरने लगेंगे। उसी क्षण से प्रभु की अपरिमेय शक्ति तथा उसकी महत्ता की ओर मेरा ध्यान खिचने लगा।''

हर व्यक्ति को किसी-न-किसी प्रसंग या घटना से ज्ञान की प्राप्ति होती है। हमें समझना चाहिए कि भगवान की दया से ही ऐसे निमित्त बनते हैं।"

श्रीभगवद्गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिया है तथा हमारे आचार्यों ने जो बातें बताई हैं, उनके तथा संत लॉरेंस ने ईसाई धर्मावलंबियों को जो उपदेश दिये हैं, उनमें गजब की साम्यता दिखाई देती है। उसे देखकर मन चकित हो जाता है। हमारी शंकाएं दूर हो जाती हैं।

"भगवान एकदम तुम्हारे पास है। उसे अपना पक्का मित्र मानो। उसके सामने अपने सारे विचार रक्खो। वह तुम्हारा साथी है। उसके सान्निध्य में जीवन बिताओ।" लॉरेंस ने अपने उपदेशों में कहा है।

मुक्ति के लिए जो कई योग बताये गए हैं, संत लॉरेंस ने—'भगवान को अपना मित्र समझने' के एक उच्चकोटि के योग का उपदेश दिया है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

: २ :

उनके उपदेश

संत लॉरेंस सबको यही उपदेश देते रहे कि सर्वशक्तिमान परममित्र भगवान को अपना साथी बना लो। अपने छोटे-बड़े सभी काम उसीको अर्पण कर दो। जो-कुछ करो, प्यार के साथ उसीके लिए करो। श्रीभगवद्गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन से यही कहा है :

मत्कर्म परमो भव;
मय्येव मन आधत्स्व,
मयि बुद्धि निवेशय
मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्
सिद्धिमवप्स्यसि...इत्यादि

संत लॉरेंस के उपदेशों में और भगवद्गीता के उपदेशों में एक ही तत्व है।

संत लॉरेंस दूसरों को जो उपदेश देते थे उसपर वह स्वयं भी आचरण करते थे। मठ के संन्यासियों की हर प्रकार की सेवा करते थे। उनके लिए पानी भरते थे, उनके कपड़े धोते थे, खाना बनाते थे और बर्तन मांजकर उनके कमरों की सफाई करते थे। यह सारा काम करते हुए भी भगवान में सदा अपना चित्त लगाये रखते थे। उनके चेहरे पर सदा हर्ष

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

छाया रहता था। किसी प्रकार के शारीरिक या मानसिक श्रम के चिन्ह नहीं दिखाई देते थे। उनका पहनना, ओढ़ना सीधा-सादा था। उसमें आडंबर नहीं होता था। उन्हें देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि वह बड़े योगी हैं।

सामान्यतः संन्यासियों की वेश-भूषा और व्यवहार साधारण लोगों से भिन्न होते हैं। संत लॉरेंस को देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि वह सामान्य लोगों से अलग थे।

एक सज्जन ने, जो संत लॉरेंस के पास उपदेश लेने के लिए गये थे, लिखा है :

"संत लॉरेंस एक मामूली आदमी के जैसे सरल हैं, सीधे-सादे हैं, किन्तु उनमें आध्यात्मिकता और ज्ञान का तेज असाधारण है।"

संत लॉरेंस कहा करते थे, "मेरी उपासना का ढंग अत्यन्त सरल है। हर किसीके लिए वह साध्य है। मैं जिस प्रकार भगवान को अपना मित्र मानकर चलता हूं, वह हर कोई कर सकता है। यह नहीं समझना चाहिए कि यह साधु-महात्माओं का ही मार्ग है। मैं जिस प्रकार प्रभु की भक्ति में लीन रहता हूं, वैसा हर किसी के लिए संभव है।"

"हर चीज के लिए बच्चा जिस प्रकार अपनी मां पर निर्भर रहता है, उसी प्रकार हमें भगवान का सहारा लेना चाहिए। यदि हम चाहें तो इसमें कोई क़ठिनाई नहीं हो सकती। इसीसे हमें सुख-चैन की प्राप्ति हो सकती है, अन्य उपायों से नहीं।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

: ३ :

भगवान का आश्रय

अब आगे जो लिखा गया है, वह सभी संत लॉरेंस के स्वयं के वचन हैं।

"जिस प्रकार बच्चा अपनी मां से चिपटकर रहता है उसी प्रकार भक्तजनों को चाहिए कि वे भगवान के आश्रय में रहें। उपासना का यही अच्छा ढंग है। जिसे भगवान पर पूरा भरोसा नहीं हैं, वह निरा मूर्ख होता है। वह न स्वयं अपनेको पहचानता है, न परमात्मा का ही उसे ज्ञान है।"

"भगवान चाहता है कि वह हमारे हृदय में आकर बसे। हमें चाहिए कि हम अपने दिल को, जिसे हम भगवान को समर्पित कर रहे हैं, खूब साफ रखें, सदा सतर्क रहें कि वहां बुरे विचार न घुस जायं। बुरे विचार हमारे परम शत्रु होते है। वे हमें पाप की ओर ले जाते हैं और मन की स्वच्छता को बिगाड़ते हैं। हृदय की स्वच्छता के लिए अगर हम प्रभु से सच्चे दिल से प्रार्थना करें तो वह अवश्य हमारी मदद करेगा और हम पाप की ओर ले जानेवाले बुरे विचारों से बच सकते हैं।"

"आप लोगों को जो बातें मैं बताता हूं वे अपने स्वयं के अनुभव से बता रहा हूं। मैंने देखा है कि अगर हम अपना

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

हर कार्य उसकी खुशी के लिए करें तो अपने जीवन में सुख पा सकते हैं । वही सन्मार्ग है । हमारा उद्देश्य यही होना चाहिए कि 'वह' खुश हो । हां, खुशामद करके किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए हमारा प्रयत्न न होना चाहिए । छोटे-से छोटा काम भी 'भगवत् प्रीत्यर्थं' होना चाहिए ।"

"भगवान को अपना मित्र बनाने, कदम-कदम पर उसकी सलाह लेने व उसके साथ बातचीत करने के लिए प्रारम्भ में अथक प्रयत्न की आवश्यकता होगी । बाद में हम देखेंगे कि 'वह' हमारे प्रयत्नों को सफल करने को बड़ा उत्सुक है । हम देखेंगे कि हमारे ऊपर 'उसका' प्रेम दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है ।"

"जब कभी मुझे कोई अच्छा काम करने का मौका मिलता हैं तो मेरा पहला काम भगवान की प्रार्थना करना होता है । मैं कहता हूं कि 'हे प्रभो, तुम मेरे साथ रहकर मेरी मदद करो । तुम्हारे बिना अकेले मुझसे यह काम नहीं होने का ।' जब कभी मैंने यह मांग की है तभी मैंने अपने अन्दर खूब ताकत पाई है ।"

"मुझसे कई बार भूलें भी हो जाती हैं । तब मैं भगवान से कहता हूं, 'हे मालिक, तुमने मुझे अकेला क्यों छोड़ दिया? क्या तुम यह नहीं जानते कि मुझसे अकेले कोई काम नहीं होता । अब भविष्य में मेरे प्रति उदासीनता मत दिखाओ ।"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

यों भगवान के पास अपना दुखड़ा रोकर मैं फिर निश्चिन्त हो जाता हूं, और 'उसका' ध्यान करके उसे अपने अन्दर बिठा लेता हूं। फिर मुझे चिंता किस बात की !"

"हम जब कभी भगवान की दया-याचना करते हैं, तो वह हमें सच्चे दिल से और छल-कपट के बिना करनी चाहिए। उसकी दया अचूक होती है। मैंने अपने अनुभव से यह देखा है।"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

: ४ :

सब काम भगवान की सेवा के लिए

"शुरू-शुरू में खाना पकाने का काम मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। उस काम से मुझे चिढ़ थी, किन्तु धीरे-धीरे समझने लगा कि यह काम तो भगवान की सेवा का है। उसकी कृपा की याचना करके उस काम को करने लगा, तब से वह ठीक ढंग से होने लगा। इस तरह पन्द्रह वर्ष तक मैंने खाना पकाने का काम किया। उसके बाद मैंने मोची का काम हाथ में लिया और उस काम को भी मैंने बहुत दिलचस्पी से किया।"

"किन्तु अपने मन पसन्द काम से हटाये जाने के लिए भी मैं हमेशा तैयार रहता था। मैंने यह संकल्प कर लिया था कि मेरे सभी काम भगवान की सेवा के लिए ही हैं। इसलिए अपनी पसन्दगी या नापसन्दगी का सवाल ही मैंने पैदा नहीं होने दिया।"

"मठ में प्रार्थना के लिए खास समय निश्चित रहता था। इसके बावजूद तो मैंने सभी समय 'उसकी' प्रार्थना का ही समय माना। कठिन-से-कठिन शारीरिक श्रम करते हुए मैंने भगवान का स्मरण कभी नहीं छोड़ा। प्रभु के लिए किये गए कामों को मैंने प्रार्थना का ही रूप माना है।"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

"मन की अस्थिरता और चंचलता हमारे दुश्मन हैं, हमारे लिए बहुत अहितकार हैं। हमारे कष्ट हमारे मन के इधर-उधर भटकने के कारण ही पैदा होते हैं।"

"फिजूल के विचारों के मन में आते ही हमें अपने-आपको समझा लेना चाहिए कि ये विचार हमारे लिए निरर्थक हैं, हमारे उद्देश्य के साथ इनका कोई वास्ता नहीं, मुक्ति के लिए ये साधक नहीं, बल्कि बाधक हैं। इस प्रकार व्यर्थ के विचारों को मन से हटाकर भगवान के साथ सम्पर्क जोड़ना चाहिए। भगवान के साथ का यह सम्पर्क हमें पार लगायगा। इसको छोड़ दूसरे विचार किसी मतलब के नहीं होते।"

"शुरू-शुरू में मेरा काम यही होता था कि चंचल व अस्थिर मन को खींचकर भगवान के समक्ष लाऊं और प्रभु से वार्तालाप करूं।"

"लोग श्लोक या भजन गाकर प्रार्थना करते हैं; पर मुझसे इस तरह प्रार्थना नहीं होती। पहली बार जब मैंने ऊंची आवाज में श्लोक या भजन बोलकर प्रार्थना करने का प्रयास किया तो मुझसे वह हुआ नहीं। तब मैंने अपना ढंग बदल लिया।"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

: ५ :

मोक्ष का एकमात्र मार्ग

"भगवान से हमारी भेंट प्रेम के द्वारा ही होनी चाहिए। जप-तप, यम-नियम, ये सब इस प्रेम की प्राप्ति के ही साधन हैं। शरीर को दुःख देकर नहीं मान लेना चाहिए कि हमने तप किया। मैंने इसके बारे में बहुत सोच-विचार किया है। मेरा यही निष्कर्ष है कि हम अपने सभी काम भगवान को समर्पित कर दें और उसके प्रति अटूट भक्ति रखें। मोक्ष का यही एकमात्र मार्ग है। इसी मार्ग को मैं तप कहूंगा।"

"मुझसे जब कोई काम बिगड़ जाता है तो भगवान को पुकारकर कहता हूं कि 'मैंने तुम्हें साथ लिये बिना काम शुरू करने का दुस्साहस किया था। उसका नतीजा देख रहा हूं।' और जब कभी मैं कोई भी काम ठीक ढंग से कर लेता हूं तो उसकी सफलता के लिए प्रभु को धन्यवाद देता हूं।"

"इन दिनों मेरे मन में भगवान के चिन्तन के अलावा और कुछ नहीं आता। अन्य विचारों को मेरा मन स्थान देता ही नहीं, साफ इन्कार कर देता है। भगवान की दया से मुझको यह शक्ति मिल गई है।"

"उसकी दया पर मेरा पूरा भरोसा है। उस भरोसे के

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

आधार पर कभी-कभी जान-बूझकर मैं दूसरे विचारों को मन के द्वार तक लाकर देखता हूं कि क्या होता है। फिर भगवान की प्रार्थना अंतर्मन से गिड़गिड़ाकर करने लगता हूं। उसके बाद फिर दुर्विचारों का नाम-निशान नहीं रहता।"

"कभी-कभी व्यावहारिक कामों को भी करना होता है। उसके लिए मैं पहले से कुछ नहीं सोचता। वक्त आने पर प्रभु का मार्ग-दर्शन मुझे मिल जाता है, और बिना किसी कठिनाई के सब काम ठीक तरह से हो जाते हैं। सब उसके हाथ में है। बीती बातों से भी मैं व्याकुल नहीं होता और निश्चिन्त होकर सबकुछ करता रहता हूं।"

"जब खाना खा चुकता हूं तो भूल जाता हूं कि मैंने क्या खाया। मैं ज्ञानी पुरुष नहीं हूं। जैसा जो मुझे आता है वैसे करता जाता हूं। भगवान रास्ता दिखाता है। उसका आभार मानते हुए मेरी गाड़ी चलती चली जा रही है।"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

: ६ :

सच्चा संन्यास

"मैं एक संन्यासी हूं। मैंने दीक्षा ली है। दीक्षा-प्राप्त संन्यासियों के लिए निर्दिष्ट कुछ जप-तपादि होते हैं। मालूम नहीं, क्यों इन चीजों में मेरा मन बिलकुल नहीं लगता। उनको करते हुए एकदम निरुत्साहित हो जाता हूं। पर अपनी दिनचर्या में जब लग जाता हूं तभी भगवान के सान्निध्य का अनुभव कर पाता हूं।"

"कुछ लोग काफी कठिन व्रतों का पालन करते हैं, किन्तु भगवान तो सबसे ज्यादा हमारा प्रेम चाहता है, जबकि लोग इस जरूरी चीज को न भूलकर पूजा-पाठ करने में लग जाते हैं। जोकि व्यर्थ की चीज है।"

"केवल पांडित्य से भगवान का दर्शन संभव नहीं। हृदय में प्रभु के प्रति प्रेम उमड़ना चाहिए। उनके दर्शन के लिए अनन्य चाह होनी आवश्यक है।"

"हमें उन सभी चीजों का, सभी क्रियाओं का, त्याग कर देना चाहिए, जो हमें भगवान से दूर रखती हैं। वही सच्चा संन्यासी है और तभी हम भगवान के निरन्तर अस्तित्व का अनुभव कर पायंगे।"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

"मेरी इस बात को सत्य मानिये । इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि भगवान हमारे पास खड़ा है । हर क्षण हम उसकी मदद ले सकते हैं, 'उससे' मार्ग-दर्शन प्राप्त कर सकते हैं, 'उसकी' इच्छा जान सकते हैं ।"

"उससे सलाह लेने के बाद कोई भी काम हम खुशी से शुरू कर सकते हैं । हमारे सभी काम 'उसी के लिए' समर्पित हों ।"

"मोक्ष पाने के लिए बाह्याडम्बरों की जरूरत नहीं । रोजमर्रा के हमारे सभी काम भगवान के लिए होने चाहिए । उसका ध्यान करते हुए हमें चलना चाहिए । आराधना भक्ति से प्रेरित होकर होनी चाहिए, दूसरों को दिखाने के लिए अथवा उनकी सराहना पाने के लिए नहीं । भक्ति की अपेक्षा क्रिया-विधियों पर अधिक ध्यान दिया जाता है । उसे भी लोग ढंग से नहीं कर पाते । यह दयनीय स्थिति है । किसी भी प्रकार के दिखावे के बिना प्रभु का ध्यान करते हुए हम अपने नित्य कर्म करते जायं तो भगवान को हम पा लेंगे । मैंने यह अपने अनुभव से स्पष्ट देखा है ।"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

: ७ :

तीन गुण

"काम-काज और प्रार्थना के लिए हम अलग-अलग समय निकालते हैं। इसमें मैं बुद्धिमत्ता नहीं देखता। प्रार्थना के समय भी और काम-काज में भी, जब व्यस्त रहें तब भी हमें भगवान के साथ अपना सम्पर्क बनाये रखना चाहिए।"

"अपने हृदय में स्थित प्रभु को पहचानकर और इस भावना को मन में सुरक्षित रखकर, अपने दैनिक कार्यों को स्वाभाविक ढंग से करते जाना, यही भगवान की प्रार्थना करने का मेरा तरीका है। भगवान के सान्निध्य में मैं तल्लीन हो जाता हूं और हर छोटा-मोटा काम-काज उसीको समर्पित करता जाता हूं और वह हमारे प्रेम को स्वीकार करता है। प्रेम और भक्ति से किये गए कामों में उच्च और नीच का अन्तर नहीं होता।"

"सच्चे आस्तिक बनने के लिए तीन गुणों की आवश्यकता होती है: अटल श्रद्धा, श्रद्धा के साथ प्रभु की दया की आकांक्षा और भगवान के प्रति अनन्य प्रेम के कारण निश्चिंत रहना।"

"यदि इन तीनों गुणों में से पहला गुण भी किसी के पास हो तो वह सबकुछ प्राप्त कर सकता है। दूसरे गुणों से उद्देश्यों

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

में आसानी से सफलता पाई जा सकती है। तीनों गुण हमारे अन्दर आ जायं तो फिर पूछना ही क्या!"

"भक्ति के द्वारा हम अपना उद्धार चाहते हों तो हमें चाहिए कि हम अपनी खूब जांच कर लें और तब हम देखेंगे कि हमारे अन्दर कितनी कमियां हैं और भगवान के पास जाने के लिए हम कितने अयोग्य हैं। भगवान हमें कष्ट और दुःख हमारे अपने पापों को धोने और हमारे झूठ, दंभ, अहंकार को मिटाने के लिए देता है। जितना दुःख और कष्ट हम झेलते हैं, उतना ही पाप के बोझ से हलके हो जाते हैं। ऐसा करके भगवान हमारी परीक्षा ही लेता है। इस प्रक्रिया में भक्तों को भी दुःखी और उपेक्षाओं का पात्र हो जाना पड़ता है। इसे हम भगवान की अपने पर दया और कृपा ही समझें। कष्टों व दुःखों से घबरायें नहीं, बल्कि प्रसन्नता से ये सब सहन करें।"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

: ८ :

हृदय : भगवान का घर

"हम भी कैसे मूर्ख हैं कि जरा-सी देर बैठकर ध्यान कर लेते हैं और खूब खुश हो लेते हैं। भगवान की दया बड़ी तेजी से प्रवाहित होकर जब हमारी ओर आती है तो उसे हम अपनी मूर्खता के बांध से रोक देते हैं। हमें चाहिए कि हम उस बांध को हटा दें और भक्ति तथा करुणा के सागर में खूब गोते लगायें। हम दीक्षा-प्राप्त संन्यासियों में अत्र जागृति आनी चाहिए। जागृत नहीं रहेंगे तो जिस पर्वत पर चढ़ रहे हैं, वहां से खड्ड में गिरकर नष्ट हो जायंगे।"

"मन जब तूफान में फंसी नौका की भांति डावांडोल होता है तब हम प्रभु को जागृत करके उसकी शरण में जायं। हमारी जीवन-नौका को पार लगाने की क्षमता उसीमें है।"

"हमें चाहिए कि भगवान को हम अपना हृदय सम्पूर्ण रूप से सौंप दें। हमारे हृदय में केवल उसीके लिए स्थान होना चाहिए। दूसरों के साथ वह वहां क्यों वास करेगा? जो स्थान भगवान का है, उसे हम साफ-सुथरा रखें। वह स्वच्छता चाहता है। जब हम अपने हृदय को भगवान का घर बना देंगे तो हम जब चाहेंगे तब उसका दर्शन कर पायेंगे। हृदय में दूसरी ऐसी किसी भी चीज को जगह न होनी चाहिए, जो

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

भगवाद्-दर्शन में रुकावट डालती हो।

"भगवान को अपने साथ रखकर जीवन बिताने में जो सुख होता है, उसकी तुलना भला किस चीज के साथ हो सकती है ! किन्तु मैं आपसे कहना चाहता हूं कि ध्यान का लक्ष्य ध्यान ही हो। सुख की आशा या प्रतीक्षा में ध्यान या भक्ति अनुचित है। दीक्षा-प्राप्त संन्यासी या जन-साधारण दोनों के लिए यह शक्य है। सदा प्रभु को ध्यान में रखकर जीवन बिताना सबके ही लिए सरल है।"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

: ६ :

भगवत्-प्रेम में सम्पूर्ण आनंद

"जो भगवान को सचमुच चाहता है उसका दिल दूसरी और चीजों के पीछे जा नहीं सकता। भगवत-प्रेम में ही वह संपूर्ण आनन्द पाता है। भक्त स्वेच्छा से ही अन्य चीजों का त्याग कर देता है, क्योंकि प्रभु के सान्निध्य में उसे सम्पूर्ण आनन्द मिल जाता है। अतः अन्य वस्तुओं की चाह के लिए उसके पास जगह नहीं होती।"

"सच्चा भक्त अपने रोज के काम-काज का तिरस्कार नहीं करता, बल्कि उन्हें और अच्छी तरह करता है—बगैर किसी घबराहट या शिकायत के। अपने हृदय-मंदिर में भगवान की स्थापना करके बिना भूले-चूके वह सब काम करता रहता है।"

"जो आदमी सदा भगवान के सान्निध्य में ही रहता है वह फिर पूजा-पाठ की ओर विशेष ध्यान नहीं देता। उसे उन कामों की आवश्यकता भी नहीं रहती। उसे तो सिद्धि प्राप्त हो चुकी है। तब साधनों के पीछे वह क्यों भागे ?"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

: १० :

प्रार्थना के लिए ऊंची आवाज नहीं

"भगवान हमसे ज्यादा कुछ नहीं चाहता। हम उसको सदा याद करते रहें, उसका आभार मानते रहें और संकट के समय उसकी दया के लिए प्रार्थना करते रहें, इतना काफी है। संकट के आने पर हम धीरज रखें और भगवान से यह प्रार्थना करें कि तुम्हारे लिए मैं यह सब सहन कर लूंगा। और जब सुख और आनन्द का अवसर प्राप्त हो तब प्रभु का आभार मानना भी न भूलें। सुख में, दुःख में, सब स्थिति में उसके सामीप्य का अनुभव हो, विचार हो, तो भगवान प्रसन्न हो जाता है।"

"शोर-गुल के साथ, ऊंची आवाज से प्रार्थना करने की जरूरत नहीं। भगवान दूर थोड़े ही है! वह तो बहुत ही नजदीक है। ऊंची-ऊंची दीवारोंवाले मंदिर में नहीं, हमारे हृदय-रूपी मंदिर में ही तो उसका वास है। उसे ढूंढ़ने को इधर-उधर क्यों भटकें? जहां हम हैं, वहीं उससे मिलकर उसके साथ बातचीत हो सकती है।"

"हमारी धीमी आवाज को वह सुन लेगा। हर कोई यह सान्निध्य प्राप्त कर सकता है। हमारी शक्ति को भगवान खूब अच्छी तरह पहचानता है और वह अपने को हमारी शक्ति के अनुसार अनुकूल बना लेता है।"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

: ११ :

मन की चंचलता को रोकें

संत लॉरेंस ने एक पत्र में लिखा है :

"अब विलम्ब करना ठीक नहीं होगा। वह हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। हिम्मत से उसके साथ मिलने के लिए तैयारी कर सकते हैं। तुम्हारी उमर चौंसठ साल की हो रही है और मैंने अस्सी साल पूरे कर लिये हैं। अब और समय क्यों गंवाया जाय? जो समय बचा है उसे उसीके निकट रहकर पूरा करें।"

"अभ्यास करो। धीरे-धीरे इसके आदी हो जाओगे। नम्र होकर उसकी दया की याचना करो। अपना दिल पूरी तौर से भगवान को सौंप दो। सुबह-शाम, दिन-रात, सारा समय, जैसा मैंने बताया है, काम के समय और आराम के समय भगवान को याद किये बिना मत रहो। यह अच्छी तरह कर लोगे तो फिर दूसरे किसी व्रत के पालन की जरूरत नहीं रहती। भगवान व्रत या तप की बनिस्बत हमारा प्यार चाहता है। तप-जप आदि साधनों से भी अधिक वह प्रेम या भक्ति से खुश होता है। मेरा यह तरीका तुम भी आजमाओ, बिना किसी हिचकिचाहट के।"

"ध्यान के समय जो रुकावटें पेश आती हैं, तुम उसका

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

उल्लेख कर रहे हो। पर यह कोई नई बात नहीं है। हरेक को यह अनुभव हुआ है और होता है। मन स्वभाव से ही अस्थिर होता है। इधर-उधर भागने का प्रयत्न करता है। किन्तु मनपर विजय पा सकते हैं। जब कभी मन चंचल होने लगे तो हमें चाहिए कि हम दृढ़ता के साथ उसे रोकें। डांटकर कह दें कि तेरा लक्ष्य तो भगवान है। तू किधर भटकने लगा?"

"आदतें जबर्दस्त होती हैं। चंचल मन को एक जगह टिकाना श्रम-साध्य होता है। ठीक प्रार्थना के समय अन्य कई विचार मन में आने लग जाते हैं। इसका मेरे पास तो एक ही इलाज है। भगवान के पास अपनी भूलें स्वीकार करो और दीन होकर उसकी शरण में जाओ।"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

: १२ :

'उसपर पूरा भरोसा रखो'

"प्रार्थना के समय लंबे प्रवचनों का कोई मतलब नहीं होता, बल्कि भगवान के सामने तो हमें ऐसे खड़े होकर प्रार्थना करनी चाहिए जैसे एक मूक और अपंग भिखारी श्रीमन्त के द्वार पर खड़े होकर भिक्षा मांगता है। भगवान के प्रति अनन्य ध्यान रखो, मन को और कहीं न जाने दो, बस।"

"मन की अस्थिरता को देखकर घबराओ नहीं, उससे तो और हानि होगी।"

"मन को धीरे-से समझाकर उसे भगवान के समक्ष ले आओ। तुम प्रभु की कृपा-दृष्टि अवश्य पाओगे।"

"प्रार्थना के समय मन की स्थिरता के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। सदा भगवान का स्मरण करते रहें, तो एकाग्रता प्राप्त करना कठिन न होगा। अभ्यास से सब कामों में सफलता मिलती है।"

"इस संसार में असंख्य गड्ढे और खाइयां हैं। उनमें गिरने से बचने के लिए हमें चाहिए कि सदा भगवान को साथ रखें। तभी हमारी रक्षा हो सकती है।"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

"भगवान दूर हो, तो अखण्ड प्रार्थना अशक्य हो जाती है। ध्यान-मार्ग से भगवान को अपने पास रखो। ध्यान के लिए भी अभ्यास की नितान्त आवश्यकता होती है।"

"तुम्हें लगता है कि मैं एक ही बात को बार-बार दुहराते जा रहा हूं। यह सही बात है। पर मैं विवश हूं। मैंने जो उपाय आजमाये हैं और जिनमें मैं सफल हुआ हूं, वही उपाय दूसरों को भी बता रहा हूं। तुम्हीं बताओ, मैं और क्या करता ?"

एक दूसरे पत्र में संत लारेंस लिखते हैं :

"मैंने जो बताया है, उसे भूलो मत। दिन-रात कामों के बीच और आमोद-प्रमोद में भी, ईश्वर का स्मरण करते जाओ। 'वह' हमारे बीच में है। उसकी अवहेलना नहीं होनी चाहिए।"

"कोई जान-पहचानवाला मित्र तुमसे मिलने के लिए आये तो क्या तुम उसके प्रति उदासीनता दिखाओगे ? उसका तिरस्कार करोगे ?"

"भगवान तुम्हारा प्रियतम मित्र है। उसके प्रति भला कभी अनादर हो सकता है ? हम लोगों ने दीक्षा ली हुई है। जिस काम को हमने हाथ में लिया है और जिस उद्देश्य से

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

लिया है, उसे हम सुचारु रूप से करें। यदि काम उस समय ठीक ढंग से नहीं हो रहा हो तो अभ्यास से उसे सीख लेंगे। घबरायंगे नहीं। मैं भी तुम्हारे लिए भगवान से प्रार्थना कर रहा हूं।"

"भगवान से मैं यह नहीं मांग रहा कि तुम्हारी बीमारी ठीक हो जाय। मेरी तो उससे यही प्रार्थना है कि कष्ट-सहन करने के लिए वह तुम्हें शक्ति दे। दर्द देनेवाला उसे सहने की शक्ति भी देगा ही।"

"मालिक की जो भी मर्जी हो, उसे अपनाने की आदत डाल लो और भगवान से प्रार्थना करो कि वह तुम्हें शक्ति दे। जिसे हम दुःख समझते हैं, वह असल में दुःख नहीं होता। हमें ऊपर उठाने के लिए भगवान हमको यह अनुभव देता है। इस बात को न समझने के कारण ही लोग दुःख-दर्द से घबरा जाते हैं। दीक्षा-प्राप्त कर हम लोगों को समझ लेना चाहिए कि भगवान हमें ये दुःख हमारे कल्याण और उद्धार के लिए दे रहा है। यह उसकी दया-दृष्टि है। दुःख के समय ही तो वह हमारे बहुत पास होता है, जबकि हम उसे याद करते हैं। सुख और चैन के समय उसका और हमारा फासला बहुत हो जाता है।"

"वही सच्चा हकीम और वैद्य है, दूसरा कोई नहीं। उसी-पर पूरा भरोसा रखो। दूसरों की तलाश में मत जाओ। हम

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

भगवान को भूलकर दवाइयों के पीछे पड़ते हैं और रोग को और बढ़ा लेते हैं। बिना उसकी मर्जी के किसी भी इलाज से भला फायदा हो सकता है ?"

"कभी-कभी शरीर के कष्टों से आत्मा को लाभ ही होता है। बिगाड़नेवाला बनायेगा भी। हमारी भलाई के लिए ही हमें वह बीमारियां देता है।"

"प्रेमी से प्रेयसी को दर्द का अनुभव हो नहीं सकता। भगवान को हम सचमुच चाहते हों, तो उसके दिये दुखदर्द को भूल जायंगे और उस दुःख में भी आनन्द का अनुभव करने लगेंगे।"

"मेरी बात मानो। हताश न होओ। भगवान से कृपा-याचना करो। मैं भी तुम्हारे लिए दुआ करूंगा। मेरी शक्ति सीमित है, तो भी जो कुछ मुझसे बनेगा, सो करूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

: १३ :

भगवान कहीं दूर नहीं हैं

संत लॉरेंस के एक अन्य पत्र की पंक्तियां देखिये :

"भगवान सर्वज्ञ है। हमारी आवश्यकताओं को वह खूब अच्छी तरह से जानता है। वह हमें दिल से प्यार करता है और हमारा भला चाहनेवाला सच्चा दोस्त है। यदि इस बात को हम समझ लें तो उसके दिए हुए सुख-दुःख से विचलित न होकर संतुष्ट रहेंगे। परमपिता के प्यार को हमें ठीक से समझना चाहिए। यदि हम यह समझ पायें तो दुःख में भी सुख ही देखेंगे।"

"भगवान कहीं दूर नहीं है। वह हमारे बीचों-बीच—बहुत ही पास है। हमें इधर-उधर उसे ढूंढ़ने-फिरने की कोई आवश्यकता नहीं। यह जानकर मैं बहुत खुश हुआ कि तुम एकदम अच्छे हो गये हो। मुझे लग रहा है कि अब मैं बहुत जल्दी प्रभु के चरणों में पहुंच रहा हूं। उसके दर्शन में अब देरी नहीं।"

"तुम मेरे लिए प्रार्थना करो और मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करूंगा।"

इस पत्र के लिखने के कुछ दिनों बाद ही ज्ञानी संत लॉरेंस का देहावसान हो गया। □□

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

मंडल का
आध्यात्मिक साहित्य

1. धर्म-नीति
2. हमारी परम्परा
3. संत-वाणी
4. संत सुधासार
5. सूफ़ी संत-चरित
6. भगवद्गीता
7. विष्णु सहस्रनाम
8. बुद्धवाणी
9. श्री अरविन्द का जीवन-दर्शन
10. गोस्वामी तुलसीदास के सुबोध दोहे
11. कबीरसाहब की सुबोध साखियां

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection